Journal of Research in Education
ISSN (P): 2347-5676 | ISSN (O) : 2582-2357
Vol.9 No.2 | December, 2021 | pp. 92-101

St. Xavier's College of Education
(Autonomous)
Digha Ghat, Patna,Bihar-800011

महाविद्यालयों के बी०एड० संकाय में अध्यापनरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का एक अध्ययन

सविता पाण्डेय*
डॉ० रत्ना गुप्ता**

सार

प्रस्तुत अध्ययन में बी०एड० संकाय में अध्यापनरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में 60 शिक्षकों का चयन किया गया है। जिसमें से 30 शिक्षक स्ववित्तपोषित बी०एड० महाविद्यालयों के तथा 30 शिक्षक वित्तपोषित (अनुदानित) बी०एड० महाविद्यालयों के है, को सम्मिलित किया गया है। शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के मापन हेतु General Teaching Competency Scale (डा० बी० के० पासी तथा एम० एस० ललिता द्वारा निर्मित) का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के परिणामस्वरूप यह पाया गया है कि वित्तपोषित बी०एड० महाविद्यालयों की शिक्षण प्रभावशीलता का स्तर स्ववित्तपोषित बी०एड० महाविद्यालयों के शिक्षको से अधिक प्रभावी है।

मूल शब्दः वित्तपोषित बी०एड० महाविद्यालय, स्ववित्तपोषित बी०एड० महाविद्यालय, शिक्षण प्रभावशीलता

प्रस्तावनाः शिक्षा मानव जीवन का एक प्रमुख आधार है, शिक्षा के माध्यम

* शोध छात्रा, शिक्षक शिक्षा विभाग एस०एस०पी०जी० कॉलेज, शाहजहाँपुर (उ०प्र०)
** एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग, एस०एस०पी०जी० कॉलेज शाहजहाँपुर (उ०प्र०)

से ही व्यक्ति अपनी सभी छिपी हुई शक्तियों का विकास करता है। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति की जन्मजात शक्तियों, उसके ज्ञान तथा कला–कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन होता है। शिक्षा मनुष्य के निर्माण की प्रक्रिया है आज शिक्षा को वर्तमान पर केन्द्रित किया जाता हैं। आधुनिक शिक्षा बालक के सर्वागीण विकास पर बल देती है।

"Education is the most powerful weapon which you can use to change the world" – Nelson Mondela

जॉन डी0वी0 के अनुसार, ''शिक्षा जीवन की तैयारी नही है, शिक्षा ही जीवन है।''

शिक्षक छात्रों के भविष्य की शैक्षणिक सफलता और जीवन भर के शैक्षणिक परिणाम को निर्धारित करने वाला महत्वपूर्ण व्यक्ति होता है। शिक्षक की प्रभावशीलता अच्छे शिक्षण कार्य पर निर्भर करती है। छात्रों के बेहतर परिणाम के लिए शिक्षण प्रभावी होना आवश्यक होता है। प्रभावी शिक्षण के लिए शिक्षक को पाठ्यक्रम की पर्याप्त जानकारी, शिक्षण के लिए योजना, छात्रों के साथ उचित रूप से संवाद करना, सीखने के लिए उपयुक्त शिक्षण तकनीकों का ज्ञान होना आवश्यक होता है।

बर्टन के अनुसार, "Teaching is the stimulation, guidance, direction and encouragement of Learning."

शिक्षण प्रभावशीलता अच्छे शिक्षण पर निर्भर होती है। एक प्रभावशाली शिक्षक किसी भी शिक्षण संस्थान की महत्वपूर्ण कुंजी माना जाता है। किसी भी देश के भाग्य का स्वरूप उसके विद्यालयों की कक्षाओं में देखा जा सकता है। कक्षा का वातावरण शिक्षक के गुण एवं व्यवहार पर निर्भर करता है। शिक्षकों को प्राप्त सामग्री और प्रयोग करने का ढंग शिक्षक के व्यवहार को प्रभावित करता है। वास्तव में शिक्षण प्रक्रिया को शिक्षकों की प्रभावशीलता द्वारा समझा जा सकता है कि शिक्षक जितना प्रभावशाली

होगा, शिक्षण प्रक्रिया भी उतनी ही प्रभावशाली होगी।

शिक्षण प्रभावोत्पादकता के द्वारा प्रभावपूर्ण आदर्श शिक्षकों व अप्रभावी शिक्षकों का मूल्यांकन किया जाता है।

लाउरा और बेल (2008) के अनुसार शिक्षकों की प्रभावशीलता में कर्तव्यबोध, कार्य के प्रति लगन, ईमानदारी, योजना, व्यवहार, रूचि, आकर्षणत्व गुण, कक्षा शिक्षण प्रदर्शन व छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि आदि शामिल रहती है जो शिक्षक योग्यतानुसार व परिश्रम द्वारा अपने कर्तव्यों का पालन करते है व योग्यता के साथ कक्षा शिक्षण करते हुये कक्षा प्रबंधन रखते है उनमें विषय योग्यता के साथ–साथ आदर्श व प्रभावी शिक्षक की सभी विशेषताएं विद्यमान होती है।

ओथमान (2009) के अनुसार शिक्षण प्रभावशीलता बहिर्मुखी, सहमतता और कर्तव्यनिष्ठा के बीच महत्वपूर्ण संबंध है जबकि निराशा और खुलेपन का कोई महत्वपूर्ण सम्बन्ध नहीं है।

प्रणब बर्मन (2015) के द्वारा पश्चिम बंगाल के सरकारी और गैर सरकारी बी0एड0 शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन करने पर यह पाया गया कि जिन शिक्षकों की विषय में महारत, विषय को प्रस्तुत करने की शैली प्रभावी, प्रेरक रणनीति, प्रभावी संचार, छात्रों से अच्छे संबंध आदि गुण है उनकी शिक्षण प्रभावशीलता काफी अच्छी पायी गयी हैं।

अध्ययन की आवश्यकताः आजकल विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षण और सीखने की गुणवत्ता पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है। **डेवलिन (2007)** के अनुसार विश्वविद्यालयों में प्रभावी शिक्षण सुनिश्चित करने और उस प्रभावशीलता को प्रदर्शित करने में सक्षम होने के लिए दोनो पर दबाव बढ़ रहा है। विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालय स्तर पर शिक्षण एक विद्वतापूर्ण गतिविधि है जो व्यापक पेशेवर कौशल, प्रथाओं तथा उच्च स्तर की

अनुशासनात्मक और अन्य प्रासंगिक विशेषज्ञता पर आधारित है। प्रभावी शिक्षण की सामूहिक समझ की समय–समय पर समीक्षा की जानी चाहिये और महाविद्यालयों के भीतर और उनके बाहर होने वाले परिवर्तनों को स्वीकार कर नवीनीकृत किया जाना चाहिये। **स्केल्टन (2004)** के अनुसार प्रभावी उच्च शिक्षा शिक्षण एक 'प्रतियोगी अवधारणा' है। **पेनी (2003)** प्रभावी शिक्षण को मोटे तौर पर ऐसे शिक्षण के रूप में समझा जाता है जो छात्रों और उनके सीखनें पर केन्द्रित होता है। उस मौलिक धारणा से परे प्रभावी विश्वविद्यालय शिक्षण के दो व्यापक रूप से स्वीकृत घटक हैः प्रथम इसके लिए अनुसंधान द्वारा पहचाने गये विशेष कौशल और द्वितीय विशेष अभ्यास की आवश्यकता होती है। **क्रेबर (2002)** का सुझाव है कि शिक्षण उत्कृष्टता के लिए अनुशासन के अच्छे ज्ञान की आवश्यकता होती है, और कहते है कि उत्कृष्ट शिक्षक वे है जो अपने छात्रों को प्रेरित करना जानते है तथा अवधारणाओं को व्यक्त करना जानते है और छात्रों को उनके सीखने में कठिनाइयों को दूर करने में मदद करते हैं।

प्रभावी शिक्षण के लिए इन सभी प्रासंगिक कारकों और संबंधित अपेक्षाओं को सफलतापूर्वक प्रबंधित करना आवश्यक है। महाविद्यालयी स्तर पर प्रभावी शिक्षण की लगातार समीक्षा और नवीनीकरण किया जाना चाहिये। अतः प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा बी०एड० में अध्यापनरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्यः वर्तमान शोध के परिप्रेक्ष्य में जिन उद्देश्यों को प्राप्त करने का प्रयास किया गया है, वे निम्नलिखित है–

1. स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के बी०एड० संकाय में अध्यापनरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन करना।

2. वित्तपोषित (अनुदानित) महाविद्यालयों के बी०एड० संकाय में अध्यापनरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन करना।

3. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के बी०एड० संकाय में अध्यापनरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना :

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निमित्त निर्धारित उद्देश्य को प्राप्त करने के सन्दर्भ में निम्नलिखित परिकल्पना का निर्माण किया गया :

Ho_1: वित्तपोषित (अनुदानित) एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के बी०एड० संकाय में अध्यापनरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि : प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

समष्टि : शोध अध्ययन में लखनऊ विश्वविद्यालय से सम्बद्ध स्ववित्तपोषित एवं वित्तपोषित महाविद्यालयों के बी०एड० संकाय में अध्यापनरत शिक्षकों को समष्टि के रूप में लिया गया है।

प्रतिदर्श एवं प्रतिदर्श चयन विधिः

प्रस्तुत शोध कार्य में न्यादर्श का चयन दो स्तरों पर किया गया है। प्रथम स्तर पर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों का चयन किया गया है तथा द्वितीय स्तर पर चयनित महाविद्यालयों से शिक्षकों का चयन किया गया है जिसमें वित्तपोषित एव स्ववित्तपोषित बी०एड० महाविद्यालय सम्मिलित है। प्रस्तुत शोध कार्य के लिए शोधकर्त्री द्वारा उत्तर प्रदेश के लखनऊ शहर में स्थित कुल 62 बी०एड० महाविद्यालयों से प्रतिदर्श की उद्देश्यपूर्ण विधि का प्रयोग करते हुए 6 वित्तपोषित (अनुदानित) और 6 स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों का चयन किया गया है तत्पश्चात् चयनित 12 महाविद्यालयों

से आकस्मिक प्रतिदर्श विधि का प्रयोग कर 30 शिक्षको का वित्तपोषित तथा 30 शिक्षको का स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों से चयन किया गया है।

उपकरण : शोध अध्ययन के सन्दर्भ में प्रदत्त संकलन हेतु शिक्षण प्रभावशीलता के मापन के लिए **डॉ बी0 के0 पासी** तथा **एम0 एस0 ललिता** द्वारा निर्मित General Teaching Competency Scale का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय प्रविधियांः एकत्रित प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु प्रतिशत (%), मध्यमान, मानक विचलन, टी–टेस्ट विधि का प्रयोग किया गया है।

परिसीमांकनः प्रस्तुत शोध अध्ययन की समष्टि केवल लखनऊ शहर के बी. एड. संकाय में अध्यापनरत शिक्षकों तक सीमित है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं परिणामों की व्याख्या :

अध्ययन की उद्देश्य संख्या–(1) स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के बी0एड0 संकाय में अध्यापनरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन करना'' का सत्यापन General Teaching Competency Scale की सहायता से प्रतिशत के माध्यम से किया गया है, जिसके विश्लेषण से प्राप्त परिणाम को तालिका संख्या–1 मे दर्शाया गया है–

तालिका संख्या–1

जनरल टीचिंग कम्पीटेन्सी स्केल पर प्राप्त स्ववित्तपोषित महाविद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का मान प्रतिशत के रूप में–

शिक्षण प्रभावशीलता	उच्च	औसत	निम्न
शिक्षकों की संख्या (N)	18	9	3
प्रतिशत (%)	60%	30%	10%

परिणाम की व्याख्या : उपरोक्त तालिका संख्या 1 में टीचिंग कम्पीटेन्सी स्केल पर प्राप्त 30 शिक्षकों जो स्ववित्तपोषित बी० एड० महाविद्यालय से सम्बन्धित है, का शिक्षण प्रभावशीलता प्रतिशत के रूप में प्राप्त किया गया है। यह परिणाम प्रदर्शित करता है कि स्ववित्तपोषित बी० एड० महाविद्यालयों में कार्यरत 60% शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता उच्च स्तर की है तथा 30% शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता औसत स्तर का है एवं सिर्फ 10% ऐसे शिक्षक है जिनकी शिक्षण प्रभावशीलता निम्न स्तर की है।

अध्ययन की उद्देश्य संख्या (2) : वित्तपोषित (अनुदानित) महाविद्यालयों के बी०एड० संकाय में अध्यापनरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन करना'' की जाँच General Teaching Competency Scale की सहायता से प्रतिशत के माध्यम से किया गया है। जिसके विश्लेषण के पश्चात् प्राप्त परिणाम को तालिका संख्या–2 में प्रदर्शित गया है–

तालिका संख्या–2

जनरल टीचिंग कम्पीटेन्सी स्केल पर प्राप्त वित्तपोषित (अनुदानित) महाविद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का मान प्रतिशत के रूप में–

शिक्षण प्रभावशीलता	उच्च	औसत	निम्न
शिक्षकों की संख्या (N)	24	6	0
प्रतिशत (%)	80%	20%	0%

परिणाम की व्याख्या : उपरोक्त तालिका संख्या–2 में **टीचिंग कम्पीटेन्सी स्केल** पर प्राप्त 30 शिक्षकों जो वित्तपोषित (अनुदानित) बी० एड० महाविद्यालय से सम्बन्धित है, का शिक्षण प्रभावशीलता प्रतिशत के

रूप में प्राप्त किया गया है। यह परिणाम प्रदर्शित करता है कि वित्तपोषित (अनुदानित) बी० एड० महाविद्यालयों में कार्यरत 80% शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता उच्च स्तर की है तथा 20% शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता औसत स्तर की है एवं निम्न शिक्षण प्रभावशीलता वाला शिक्षक शून्य है अर्थात् कोई भी शिक्षक निम्न शिक्षण प्रभावशीलता वाला नही है।

अध्ययन की उद्देश्य संख्या (3) : ''वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के बी०एड० संकाय में अध्यापनरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना'' के अन्तर्गत परिकल्पित परिकल्पना Ho_1 ''वित्तपोषित (अनुदानित) एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के बी०एड० संकाय में अध्यापनरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अन्तर नही है।'' का सत्यापन टी–अनुपात के माध्यम से किया गया है जिसके विश्लेषण से प्राप्त परिणाम को तालिका संख्या–3 में प्रदर्शित किया गया है–

तालिका संख्या–3

जनरल टीचिंग कम्पीटेन्सी स्केल पर प्राप्त मध्यमान, मानक विचलन, तथा टी–अनुपात का मान

महाविद्यालय प्रकार	शिक्षकों की संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	टी प्राप्तांक	.05 सार्थकता स्तर df = 58 पर निष्कर्ष
स्ववित्तपोषित	30	87.83	15.78	2.98	सार्थक (अस्वीकृत)
वित्तपोषित	30	99.19	13.62		

परिणाम की व्याख्या : उपरोक्त तालिका संख्या–3 में General Teaching Competency Scale पर प्राप्त 30 स्ववित्तपोषित बी०एड० पाठ्यक्रम तथा 30 वित्तपोषित (अनुदानित) बी०एड० संकाय में अध्यापनरत शिक्षकों के प्रदत्तों का मध्यमान क्रमशः 87.83 तथा 99.19, मानक विचलन क्रमशः 15.78 तथा 13.62 तथा प्राप्त टी–अनुपात का मान 2.98 है। प्राप्त टी–अनुपात का मान स्वतन्त्रता के स्तर **df = 58** पर सार्थकता के स्तर 0.01 पर सारणी मान 2.66 से अधिक है, अतः यह प्राप्त मान 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। प्रतिपादित परिकल्पना प्रणाली Ho_1 को अस्वीकार किया जाता है। यह परिणाम दर्शाता है कि वित्तपोषित (अनुदानित) एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के बी0एड0 संकाय में अध्यापनरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर है।

निष्कर्ष : वित्तपोषित (अनुदानित) एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के बी०एड० संकाय में अध्यापनरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन करने पर यह पाया गया कि वित्तपोषित (अनुदानित) बी०एड० महाविद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता स्ववित्तपोषित बी०एड० महाविद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता की तुलना में उत्तम हैं।

सन्दर्भः

कौल, एल०(2004). शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, विकास पब्लिसिंग हाउस प्रा० लि०, नई दिल्ली

गुप्ता, एस०पी०(2012). अनुसंधान संदर्शिका, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद

पाण्डेय, के०पी०(1991). शैक्षिक अनुसंधान की रूपरेखा, अभिताभ प्रकाशन, मेरठ

बेस्ट, जे०डब्ल्यू०(2001). 'रिसर्च इन एजूकेशन', प्रिन्टर्स हॉल ऑफ इण्डिया प्रा० लि०, नई दिल्ली

भटनागर, ए०बी० तथा अनुराग भटनागर (2011). शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, आर०लाल० बुक डिपो, मेरठ

भारद्वाज, टी०आर०(1990). शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और शिक्षण पेशों के प्रति उनके दृष्टिकोण का अध्ययन। जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन, 33(1) पी०पी० 22–23

इन्दौरिया, नर्वदा (1983). ''शिक्षकों की प्रभावशीलता, समायोजन एवं उनकी शिक्षण अभिक्षमता का अध्ययन'', लघु शोध प्रबन्ध, एम० डी० एस० विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान

शर्मा, दीप्ती (2014). बी०टी०सी० एवं विशिष्ट बी०टी०सी० अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ उ०प्र०

पाल, रमेश कुमार (2016). सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

सुजान (2010). उच्च शिक्षा में प्रभावी ऑनलाइन शिक्षण के छात्र विचार, अमेरिकन जर्नल ऑफ डिस्टेंस एजुकेशन, खण्ड 20, अंक–2

बर्मन (2016). पश्चिम बंगाल के पुरवा मेदिनपुर जिले में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता, IOSR जर्नल ऑफ हन्यूमैनिटिज एण्ड सोशल साइंस, 50–63

●●●